'मुझे बचाओ' वृक्ष की पुकार'

जंगल में मच गया शोर....
मुझे बचाओ, मुझे बचाओ
मुझे तोड़ने आ रहा
एक लकड़हारा, जिसे
न परवाह है, मेरी
न तुम्हारी
उसे परवाह है, तो
केवल अपनों की
और रोटी की।
दुर्भाग्य है मानव का
जो समझ न पाया
कि मैं ही आसरा
हूँ उसके जीवन का,
मैं ही छाया हूँ,
प्रकृति मुझ-से है,
मुझे मारकर....
वह खुद को मारेगा
आज ~~रोटी का प्रश्न~~ सवाल है रोटी
कल सवाल बनेगा पानी..
और उसके बाद
जीवन नहीं रहेगा बाकी....